उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम-शैली (Learning Style), उपलब्धि-अभिप्रेरणा (Achievement Motivation) एवं अभिभावक-आलंबन (Parental Support) का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement) पर प्रभाव का अध्ययन

पी-एच.डी.(शिक्षा शास्त्र)

उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतुसंशोधित शोध प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी
स्मृति सिंह

निर्देशिका
प्रो. सविता श्रीवास्तव

डिपार्टमेंट फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन, शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा-282005
2022

1.0.0 प्रस्तावना

भाषा एवं मनुष्य का संबंध अनादि काल से अटूट रहा है। यह व्यक्ति के संपूर्ण विकास की आधारशिला है। मनुष्य ने आज जिन ऊंचाइयों को छुआ है, उसके पीछे भी सदैव भाषा वरदान साबित हुई है। मनुष्य को यह वरदान ईश्वर द्वारा प्रदत्त है जिसके कारण उसे श्रेष्ठ प्राणी की संज्ञा दी गई है। यदि सृष्टि में शब्द की ज्योति ना होती कभी, तो यह संसार अंधकार में विलीन हो जाता अर्थात अविद्या अज्ञानता का ही दिखाई देता।

केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं, हारा न चन्द्रोज्ज्वला:।
न स्नानं न विलेपनं न, कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजा:॥
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं, या संस्कृता धार्यते।
क्षीयन्ते खलु भूषणानि, सतत वाग्भूषणं भूषणम्॥

हिन्दी अनुवाद:(मनुष्य को न तो भुजबंध, न चंद्रावत उज्जवल हार, न स्नान न सुगंधित द्रव्यों का लेप और न पुष्प सज्जित केश राशि ही शोभा देती है, क्योंकि अन्य सभी आभूषण तो घिस जाते हैं, परंतु वाणी रूपी भूषण निरंतर बना रहता है।)

अर्थात् बाजुबंद पुरुष को शोभित नहीं करते और न ही चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार, न स्नान, न चन्दन, न फूल और न सजे हुए केश ही शोभा बढ़ाते हैं। केवल सुसंस्कृत प्रकार से धारण की हुई एक वाणी ही उसकी सुन्दर प्रकार से शोभा बढ़ाती है। साधारण आभूषण नष्ट हो जाते हैं, वाणी ही सनातन आभूषण है।

भाषा एक सामाजिक व्यवहार है। मानव प्राणियों में भावों की अभिव्यक्ति और हमारे बहुत से कठिन कार्य सहजता से पूरा कराती है। भाषा व्यक्ति के विचार विनिमय का वह माध्यम है, जिसके द्वारा वह अपनी अनुभूतियों को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है। वेदों के अंतर्गत भाषा को अनेक नामों से संबोधित किया गया है जैसे गिर, वाणी इत्यादि ग्रंथों में भी स्पष्ट रूप से उद्धृत है:

"लोक व्यवहारे प्रचलित वागेन भाषाशब्देन व्यवहता"

हिन्दी अनुवाद: (लोक व्यवहार मे प्रयुक्त वाग शब्द ही भाषा के रूप में प्रयोग होता है।)

अर्थात् समस्त लोक में जो वाग प्रयुक्त होता है उसे ही हम भाषा के रूप में प्रयोग में लाते हैं।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार, "भाषा यादृच्छिक मौखिक प्रतीकों की व्यवस्था है, जिसके द्वारा मनुष्य समाज एवं संस्कृति के सदस्य होने के नाते परस्पर विचारों एवं कार्यो का आदान-प्रदान करते हैं।"

भाषा का ध्वनि से अटूट संबंध है। भाषा ध्वनियों का ही समूह है। भाषा के मौखिक रूप से ही दुनिया संप्रेषण का

माध्यम बनती हैं। जब हम मौखिक रूप से विचारों को व्यक्त करते हैं, तो अक्षरों का ध्वन्यात्मक रूप सुनाई पड़ता है एवं जब हम लिखित रूप में विचारों को व्यक्त करते हैं तो वह ध्वनियां अपने नियत अक्षरों के रूप में अभिव्यक्ति का माध्यम बनता है। अर्थात भाषा का मूल आधार ध्वनि ही होती हैं। यह दुनिया सापेक्ष, साभिप्रेत होते हैं, जिस प्रकार शरीर का संबंध आत्मा से होता है, उसी प्रकार ध्वनि का संबंध उसमें निहित विचारों से होता है।

प्रसिद्ध कवि कालिदास अपनी रचना 'रघुवंश महाकाव्य' में इस बात की पुष्टि करते हैं कि ध्वनि एवं अर्थ एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े हुए हैं: जैसे पार्वती व परमेश्वर।

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥

हिन्दी अनुवाद: (शब्द और अर्थ को भली प्रकार समझने के लिए मैं (कालिदास) शब्द और अर्थ की तरह नित्य सम्बद्ध (एकरूप) तथा संसार के माता-पिता पार्वती तथा भगवान शंकर को प्रणाम करता हूँ।)

अर्थात् बिना वाणी के कोई अर्थ नहीं हो सकता और बिना अर्थ के वाणी नहीं हो सकती। जब कोई बोलता है तो उसका एक अर्थ होता है जो उसके साथ होता है। कोई भी आसानी से अर्थ की बात कर सकता है लेकिन उसकी वाणी में हमेशा एक अर्थ होता है।

देवभाषा के रूप में प्रसिद्ध संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। यह एक शास्त्रीय भाषा है। प्राचीन काल में जन सामान्य एवं विशिष्ट जनों के संप्रेषण की भाषा थी।

यह साहित्य की भी भाषा थी। इस भाषा के साहित्य में भारतवर्ष के सभ्यता एवं संस्कृति की समग्र झलक मिलती है। संस्कृत भाषा का सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद है, जिसकी रचना लगभग ढाई हजार ईसवी पूर्व भी मानी जाती है। इसके दो रूप हैं: वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत। वैदिक संस्कृत को छंद भी कहा जाता है और इसकी सीमा चारों वेदों तक है। इसके बाद के संस्कृत को लौकिक संस्कृत कहा जाता है।

साहित्य किसी भी भाषा का हो वह समाज को प्रतिबिंबित करता है एवं संस्कृति का वहन करता है। संस्कृत भाषा में रचित साहित्य भी भारतीय सामाजिक जीवन का चित्रण करते हैं। भारतीय सामाजिक जीवन का मुख्य तत्व है।

1.1.0 संस्कृत भाषा का महत्व

संस्कृत संपूर्ण भारत की आत्मा है, यदि हमें संपूर्ण भारत राष्ट्र को जानना है तो निश्चित रूप से संस्कृत के कलेवर को समझना होगा। पूर्वी नाम संस्कृत भाषा अनादिकाल की भाषा है। इसका कलेवर भी उतना ही प्राचीन है, जितना कि

विश्व का इतिहास। इसलिए संस्कृत को संसार की प्राचीनतम भाषा कहलाने का गौरव प्राप्त है। सभ्यता के प्रादुर्भाव के साथ-साथ संधि संस्कृत का अभ्युदय हुआ और इसे विश्व की अद्वितीय निधि स्वरूप स्वीकार किया गया।

डॉक्टर राधाकृष्णन के अनुसार, “संस्कृत अनेक भाषाओं की जननी है। द्रविड़ भाषाओं पर भी इसका प्रभाव है। आज भी भारत के विभिन्न विभागों में ब्राह्मणों के मध्य संपर्क की यह सामान्य भाषा है और इसीलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि यह जीवित भाषा नहीं है। संस्कृत साहित्य का अत्यधिक प्रभाव भारत में ही नहीं वरन एशिया के अन्य भागों में भी है।

संस्कृत ने हम भारतीयों लोगों के मन पर इतनी छाप छोड़ी है कि जितना हम चेतन मस्तिष्क से जान भी नहीं पाते। एक दृष्टि से संस्कृत साहित्य राष्ट्रीय है, किंतु उसका उद्देश्य सार्वभौमिक रहा है। इसलिए जो व्यक्ति एक संस्कृत विशेष के अनुयायी नहीं थे वह भी इस भाषा के प्रति आकर्षित हुए थे।”

डॉक्टर संपूर्णानंद ने कहा कि जो लोग यह कहते हैं कि संस्कृत भाषा का समय बीत गया वे गलत सोचते हैं, संस्कृत न केवल भारत बल्कि विश्व में व्याप्त है। जो संदेश इस भाषा में है वह अन्यत्र नहीं है। संस्कृत में बहुमूल्य विभूतियां पड़ी हुई हैं। जो यहां लांछन लगाते हैं कि संस्कृत मृतभाषा है, वे गलत सोचते हैं। संस्कृत जीवित ही नहीं, बल्कि मुर्दों के लिए भी संजीवनी है। हम चाहते हैं कि संसार में काफी लोग संस्कृत के जानने वाले हो।

संस्कृत आयोग के प्रतिवेदन में उल्लेखित है “भारतीय सभ्यता वैदिक काल से जन्म लेकर चार हजार वर्षों तक संस्कृत द्वारा ही अपनी अभिव्यक्ति करती है।”

‘मनुस्मृति’ में यह श्लोक संस्कृत भाषा की पुष्टि कर देता है, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है:

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादपजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

हिन्दी अनुवाद: (विश्व के प्रत्येक भूभाग से ज्ञान के जिज्ञासु इस देश में आए और यहां के प्रतिभाशाली तत्व वेत्ताओं द्वारा नीति की शिक्षा ग्रहण की।)

अर्थात् सम्पूर्ण विश्व के समस्त भागों से ज्ञान पिपासु मानव ज्ञान की खोज में इस आर्यावृत में आएंगे तथा देश के सुसंस्कृत साहित्य एवं संस्कृति से नैतिकता और चरित्र का पाठ सीखेंगे।

उस काल में अनेकानेक विदेशियों के जिज्ञासु कदम बरबस ही इस देव संस्कृति की ओर बढ़ आए। यहाँ उन्हें अपनी

समस्त आध्यात्मिक जिज्ञासाओं के समाधन मिले। अतः उन्होंने भारत को ज्ञान का असीम स्रोत घोषित कर दिया। दार्शनिक शोपेनहॉवर का कहना था कि विश्व में यदि कभी कोई सर्वाधक प्रभावशाली व सर्वव्यापी सांस्कृतिक क्रांति आई है, तो वह केवल उपनिषदों की भूमि-भारत से। विश्व की प्राचीनतम भाषा होने के कारण धर्म ग्रंथों में संस्कृत भाषा को ईश्वरीय भाषा का स्थान दिया गया। इसे देववाणी एवं सुरभारती जैसे नामों से संबोधित किया जाने लगा। आचार्य दंडी ने अपनी रचना 'काव्यादर्श' में इस बात की पुष्टि की है:

संस्कृत नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः।
भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाण भारती॥

हिन्दी अनुवाद: (महर्षियों ने संस्कृत नाम की देववाणी का अन्वाख्यान किया है। भाषाओं में देववाणी संस्कृत मुख्य, मधुर और अलौकिक है।)

अर्थात् संस्कृत भाषा को महर्षियों के द्वारा देव भाषा के रूप में माना गया है। इन्होंने बताया कि संस्कृत भाषा बहुत ही मधुर एवं दिव्य भाषा है।

1.1.1 उच्च प्राथमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य

संस्कृत शिक्षक संदर्शिका (2012) के अनुसार संस्कृत भाषा को विषय के रूप में उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण के लिए कुछ उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं जो इस प्रकार है:

1) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वह संस्कृत भाषा में लिखे हुए सरल गद्य खंड को शुद्ध-शुद्ध उच्चारण कर सकें।
2) इस योग्य बनाना कि वह सरल संस्कृत श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करते हुए पाठ कर सकें।
3) छात्रों को कुछ महत्वपूर्ण श्लोकों को कंठस्थ करने की प्रेरणा देना।
4) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे संस्कृत के गद्य खंडो एवं श्लोकों के मुद्रित रूप को देखकर उन्हें ठीक-ठाक अपनी पुस्तिकाओं में लिख सकें।
5) छात्रों में यह योग्यता भी उत्पन्न करना कि वे कंठस्थ किए हुए श्लोकों के मुद्रित रूप को शुद्ध लिख सकें।
6) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे मातृभाषा के सरल वाक्य का संस्कृत में अनुवाद कर सकें।
7) संस्कृत के सरल गद्य खंड एवं सरल श्लोकों समझने की योग्यता प्रदान करना।
8) छात्रों को यह योग्यता प्रदान करना कि वे आवश्यकतानुसार सरल संस्कृत वाक्यों एवं श्लोकों का मातृ भाषा में

अनुवाद कर सकें।

9) छात्रों को श्रुति लेख लिखने का अभ्यास कराना।

मानव जब जन्म लेता है, तो वह वातावरण के संपर्क में आता है। वातावरण में स्वयं को समायोजित करने की चेष्टा उसे सीखने के लिए बाध्य करती है। वह ज्यों-ज्यों विकास को प्राप्त करता है, त्यों-त्यों अधिगम प्रक्रिया में तेजी आती है।

वह जिन कार्यों को नहीं जानता उसे जानने का प्रयास करता है और यही प्रक्रिया अधिगम कहलाती है। अधिगम-शैली (Learning Style) का आशय इस बात से है कि प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग तरीके से सीखता है।

अधिगम-शैली व्यक्ति के सीखने के तरीके एवं सूचनाओं के प्राप्त करने के तरीके को परिभाषित करता है। यह व्यवहार का एक प्रतिमान होता है जिसका प्रयोग मनुष्य नई चीज सीखने के लिए करता है।

कभी-कभी हम किसी भी महत्वपूर्ण चीज को नहीं याद कर पा रहे थे, जबकि उसको याद करने के लिए हम वही तरीके का प्रयोग कर रहे थे जो हमारे माता-पिता, शिक्षक एवं सहपाठियों द्वारा हमें सुझाए गए थे। लेकिन बाद में सीखने के लिए स्वयं का तरीका प्रयोग किया गया और सफलता भी प्राप्त की। यह इंगित करता है कि हमारी अधिगम-शैली भिन्न है।

व्यक्ति की अधिगम शैली उस तरीकों को बताती है जिससे शिक्षार्थी प्रक्रियाओं के ग्रहण करने सूचनाओं को समझने एवं धारण करने के लिए पसंद करता है। अलग-अलग शिक्षार्थी अलग-अलग तरीके से जैसे कि देखकर एवं सुनकर अकेले एवं समूह में काम कर तार्किक रूप से सोचकर एवं अन्य समूह द्वारा और कभी-कभी रट कर या कल्पना करके सीखता है। क्योंकि अब प्रत्येक व्यक्ति अलग है इसलिए एक शिक्षक के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वह शिक्षार्थियों में उपस्थित अधिगम-शैली संबंधी भिन्नता को समझे ताकि वह अपने दैनिक शिक्षण गतिविधियों पाठ्यक्रम तथा मूल्यांकन कार्यों में सर्वोत्तम नीतियों को शामिल कर सकें। फ्लेमिंग का अधिगम का दृश्य,श्रव्य,पठन-लेखन एवं गतिक शैली प्रतिमान सामान्तयः रूप से एक स्वीकृत प्रतिमान है।

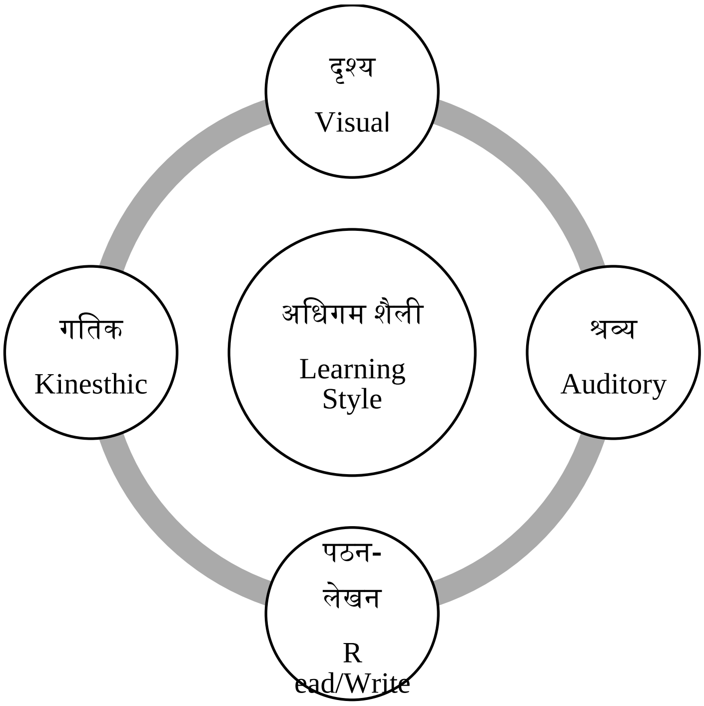

चित्र सं: 1 अधिगम शैली

- दृश्य शैली से सीखने वाले शिक्षार्थी नई सूचनाओं को प्राप्त करने एवं उन्हें समझने के लिए चित्रों, मानचित्रों तथा रेखाचित्रों के प्रयोग को पसंद करते हैं।
- श्रव्य शैली से सीखने वाले शिक्षार्थी ने विषय वस्तु को सुनकर तथा व्याख्यान से समूह परिचर्चा आदि स्थितियों में बोलकर सीखते हैं।
- पठन एवं लेखन को पसंद करने वाले शिक्षार्थी शब्दों के माध्यम से सीखते हैं ऐसे शिक्षार्थी अमूर्त संप्रत्यों को शब्दों एवं निबंधों के रूप में व्याख्यान करने में सक्षम होते हैं।
- गतिक शैली से सीखने वाले शिक्षार्थी सूचनाओं के इस प्रेस से प्रस्तुतीकरण के माध्यम से बेहतर समझते हैं। वे चीजों को हाथ से छू कर सीखते हैं।

अभिप्रेरणा से संबंधित नई विचारधारा का नाम उपलब्धि-अभिप्रेरणा (Acheivement Motivation) है। इसका सर्वप्रथम प्रतिपादन अमेरिका में किया गया। उपलब्धि-अभिप्रेरणा की प्रकृति व्यक्तिगत होती है और आधारभूत लक्ष्य उपलब्धि होता है। किसी भी प्रकार की उपलब्धि के लिए काम को करने की अभिप्रेरणा को उपलब्धि-अभिप्रेरणा कहा जाता है अर्थात कठिन कार्यों में निपुणता प्राप्त करने की आशा करना हो उपलब्धि-अभिप्रेरणा है। उपलब्धि-अभिप्रेरणा

का सिद्धांत एटकिंसन और मैंक्लीलैंड ने प्रतिपादित किया।

यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि पारिवारिक बातचीत की गुणवत्ता का बच्चों और किशोरों की शैक्षणिक प्रेरणा और उपलब्धि के साथ और युवा वयस्कों की अंतिम शैक्षिक और व्यावसायिक उपलब्धियों के साथ महत्वपूर्ण संबंध हैं। उदाहरण के लिए, थॉमस केलाघन (Kellaghan) और उनके सहयोगियों (1993) का दावा है कि छात्रों की स्कूली उपलब्धि, शैक्षणिक प्रेरणा और उन्हें प्राप्त होने वाले स्कूली शिक्षा के वर्षों की संख्या निर्धारित करने में पारिवारिक वातावरण सबसे शक्तिशाली प्रभाव है। इसी तरह, जेम्स एस. कोलमैन (1991) का कहना है कि सीखने की गतिविधियों में माता-पिता की भागीदारी से बच्चों के लिए पर्याप्त भावनात्मक और बौद्धिक लाभ होते हैं। हालांकि, उनका मानना है कि स्कूल की सफलता के लिए परिवार सहायक और महत्वपूर्ण है, शिक्षकों को बढ़ती चुनौतियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि कई बच्चे गंभीर पारिवारिक व्यवधान और उथल-पुथल का अनुभव करते हैं। हालांकि यह स्वीकार किया जाता है कि बच्चों के स्कूल की सफलता पर शायद परिवार का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव होता है, यह हमेशा स्पष्ट नहीं होता है कि कौन से पारिवारिक प्रभाव सबसे महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा, शोध के निष्कर्ष इस बारे में अनिर्णायक है कि परिवार की बातचीत और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध किस हद तक बच्चे की पारिवारिक पृष्ठभूमि और पारिवारिक संरचना से स्वतंत्र है।

माता-पिता अपने बच्चों के पहले शिक्षक होते हैं। मनुष्य की शिक्षा जन्म से ही शुरू हो जाता है और जीवन भर चलता रहता है। उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सहयोग बच्चों के विकास, सीखने और बाद के शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करती है। इसमें औपचारिक शिक्षा से पहले और उसके दौरान सीखने के लिए प्रत्यक्ष सहयोग, साथ ही पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता जैसे कारकों की अप्रत्यक्ष सुविधा शामिल है। सहयोग कार्यों में स्कूल और घर के संचार, घर पर सीखने की गतिविधियों में सहयोग, स्कूल के कार्यक्रमों में भागीदारी और स्कूल-निर्णय लेने वाले निकायों में भागीदारी शामिल हैं। सहयोग बच्चे की उम्र के अनुसार भिन्न हो सकती है, घर में पूर्वस्कूली सहयोग से लेकर बच्चे के स्कूल में संक्रमण के बाद प्रत्यक्ष सहयोग तक, जिसमें होमवर्क और कक्षाओं में स्वयंसेवा और स्कूल के कार्यों के साथ सहयोग शामिल है।

शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement) या अकादमिक प्रदर्शन वह सीमा है जिस तक एक छात्र, शिक्षक या संस्थान ने अपने छोटे या दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया है। माध्यमिक विद्यालय के डिप्लोमा और स्नातक की डिग्री जैसे शैक्षिक बेंचमार्क को पूरा करना शैक्षणिक उपलब्धि का प्रतिनिधित्व करता है। शैक्षिक उपलब्धि को आमतौर पर परीक्षाओं या निरंतर मूल्यांकन के माध्यम से मापा जाता है लेकिन इस पर कोई सामान्य सहमति नहीं है कि इसका सबसे अच्छा मूल्यांकन कैसे किया जाता है या कौन से पहलू सबसे महत्वपूर्ण हैं: प्रक्रियात्मक ज्ञान जैसे कौशल या घोषणात्मक ज्ञान जैसे तथ्य इसके अलावा अनिर्णायक परिणाम हैं, जिन पर व्यक्तिगत कारक सफलतापूर्वक अकादमिक प्रदर्शन की भविष्यवाणी करते हैं, स्कूल की उपलब्धि के मॉडल विकसित करते समय परीक्षण चिंता, पर्यावरण, प्रेरणा और भावनाओं जैसे तत्वों पर विचार करने की आवश्यकता होती है। अब, स्कूल अपने छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर धन प्राप्त कर रहे हैं। अधिक शैक्षणिक उपलब्धियों वाले स्कूल को कम उपलब्धियों वाले स्कूल की तुलना में अधिक धन प्राप्त होगा।

2.0.0 समस्या का प्रादुर्भाव एवं औचित्य

मानव सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला है। किसी भी जाति समाज देश तथा देश की उन्नति उसके शिक्षा पर ही निर्भर करती है। शिक्षा हर किसी के जीवन में सफल होने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इससे जीवन की चुनौतियों को कम करने में मदद मिलती है। शिक्षा जीवन में बेहतर संभावनाओं को प्राप्त करने के आसनों के विभिन्न दरवाजे भी खोलती है।

संस्कृत भाषा की महत्व एवं इसकी प्राचीनता के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत भाषा आज भी प्राचीनता एवं महत्व दोनों ही देशों से अपना अनुपम वैशिष्ट्य रखती है। भले ही आज के तकनीकी और वैज्ञानिक युग में प्राचीन परंपराएं एवं मूल्य धूमिल होते जा रहे हैं, किंतु अभी भी समाज का एक ऐसा शिक्षित वर्ग है जो की संस्कृत भाषा में व्याप्त सार्वलौकिक कल्याणकारी भावना को भारत की अमूल्य निधि के रूप में स्वीकार करता है। संस्कृत भाषा सिर्फ भाषा साहित्य तक सिमट गया एवं अन्य विषयों की चर्चा पाठ्यक्रमों में भी नहीं की जाती है। किसी दूसरे द्वारा लिखित कविताओं को आजीवन अन्य भाषा में बांटने के सहारे अपने उदर पूर्ति करने वाले ग्रंथ जीवनी संस्कृत सैनिकों एवं संस्था द्वारा संस्कृत के विकास की उपेक्षा करना बेमानी है।

विश्वभर की समस्त प्राचीन भाषाओं में संस्कृत का सर्वप्रथम और उच्च स्थान है। विश्व साहित्य की पहली पुस्तक ऋग्वेद

इसी भाषा का देदीप्यमान रत्न है। भारतीय संस्कृति का रहस्य इसी भाषा में निहित है। संस्कृत का अध्ययन किये बिना भारतीय संस्कृति का पूर्ण ज्ञान कभी सम्भव नहीं है।

अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषाओं की यह जननी है। आज भी भारत की समस्त भाषाएँ इसी वात्सल्यमयी जननी के स्तन्यामृत से पुष्टि पा रही हैं। पाश्चात्य विद्वान इसके अतिशय समृद्ध और विपुल साहित्य को देखकर आश्चर्य-चकित होते रहे हैं। भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी यदि कोई भाषा है तो वह संस्कृत ही है।

आज इस प्राचीन भाषा के उत्थान की आवश्यकता है। संस्कृत शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में दृष्टिकोण, सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति अभिरुचि व अभिप्रेरणा का विकास करना आवश्यक है। यह कार्य केवल शिक्षक वर्ग कर सकता है क्योंकि जब तक शिक्षक संस्कृत विषय में सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं अपनाएंगे तब तक संस्कृत भाषा का विकास संभव नहीं है।

संस्कृत शिक्षा की समस्याओं के अध्ययन के लिए तथा भाषा के विकास के संबंध में सुझाव देने के लिए डॉ सुनीति कुमार चटर्जी के अध्यक्षता में 1956 में संस्कृत आयोग का गठन किया गया था। इस समिति ने 1957 में अपना प्रतिवेदन अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया। हिंदी में अनूदित प्रतिवेदन पर संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति तथा उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष बद्रीनाथ शुक्ल ने अपनी भूमिका लिखकर उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ से प्रकाशित किया।

इस तथ्य को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि संस्कृत भाषा में एकता स्थापित करने की तथा चरित्र निर्माण की अद्भुत शक्ति विद्यमान है। अतः आधुनिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में उन छात्रों को छोड़कर जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी है, भाषा के अध्ययन के प्रसंग में ऐसा प्रावधान किया जाना चाहिए। जिससे भाषा के रूप में संस्कृत का स्थान सुरक्षित हो जाए तथा सभी छात्र संस्कृत ले सके। जो छात्र संस्कृत लेना चाहते हैं, उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई अथवा रुकावट का सामना ना करना पड़े। त्रिभाषा सूत्र के विधान में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि मातृभाषा तथा क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेजी के साथ संस्कृत या विशेष स्थिति में किसी अन्य समकक्ष प्राचीन भाषा का अध्ययन कर सकें।

आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में एक 17 सदस्य समिति की नियुक्ति सन 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समीक्षा करने के लिए मई 1990 में केंद्र की जनता सरकार के द्वारा की गई थी जिसने दिसंबर 1990 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। संस्कृत शिक्षा के एकेडमिक स्तरों के निर्धारण, रखरखाव तथा समन्वय का कार्य करने के लिए एक राष्ट्रीय स्तर

के अभिकरण की आवश्यकता है। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान को मजबूत किया जा सकता है। उसका स्तर बढ़ाया जा सकता है तथा उसे राष्ट्रीय स्तर के आयोग का दर्जा दिया जा सकता है।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948-49 ने अपने प्रतिवेदन में 131 वें पृष्ठ पर माध्यमिक विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में संस्कृत तथा अन्य प्राचीन भाषाओं के स्थान की चर्चा की है। आयोग में यह भी कहा गया है उपाधि पाठ्यक्रम में हमारे छात्रों को अब संस्कृत के अध्ययन में प्रोत्साहित किया जाएगा।

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53 ने मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषा के मिश्रित पाठ्यक्रम में संस्कृत को स्थान दिया है। साथ ही संस्कृत आधुनिक भारतीय भाषा में सम्मिलित की है, किंतु स्पष्टता संस्कृत पाठ्यक्रम की घोषणा नहीं की है।

आयोग ने सांस्कृतिक तथा धार्मिक दोनों ही पक्षों से संस्कृत की महत्ता तथा हृदयग्रहता स्वीकार किया है। संस्कृत के वर्तमान ह्रास पर खेद प्रकट करते हुए आयोग ने इस तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है कि यदि यही स्थिति बनी रहे तो भय है कि कहीं अंततोगत्वा इस भाषा के पठन-पाठन का लोप ना हो जाए।

संस्कृत शिक्षा आयोग 1956 ने एक स्वतंत्र भारत में संस्कृत की स्थिति एवं विकास की संभावनाओं पर चिंतन करने के लिए गठित किया गया था। आयोग ने अपने प्रतिवेदन में कहा है कि माध्यमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में संस्कृत को अनिवार्य स्थान मिलना चाहिए कक्षा VI में मातृभाषा तथा अंग्रेजी। संस्कृत सुभाषित आदि के पाठ प्रचलित रहेंगे। कक्षा VII से XI तक मातृभाषा की मात्रा को कम करते हुए अंग्रेजी तथा संस्कृत का विशेष अध्ययन करना।

नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क NCF 2000 के अनुसार संस्कृत भाषा के अध्ययन को प्रोत्साहित करना अत्यंत आवश्यक है। प्राथमिक या उच्च प्राथमिक स्तर के उपयुक्त स्थल पर संस्कृत को हिंदी एवं मात्रभाषा के रूप में प्रयुक्त अन्य क्षेत्रीय भाषाओँ के साथ संयुक्त भाषा के रूप में पढ़ाया जा सकता है।

नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क NCF 2005 के अनुसार गैर हिंदीभाषी राज्यों में बच्चे हिंदी सीखते हैं। हिंदी प्रदेशों के मामले में बच्चे वह भाषा सीखे जो उस इलाके में नहीं बोली जाती है। इन भाषाओं के अलावा आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में संस्कृत का अध्ययन में शुरू किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार संस्कृत भाषा के वृहद एवं महत्वपूर्ण योगदान तथा विभिन्न विधाओं एवं विषयों के साहित्य, सांस्कृतिक महत्व, वैज्ञानिक प्रकृति के चलते संस्कृत को केवल संस्कृत पाठशालाओं एवं विश्वविद्यालयों तक सीमित न रखते हुए इसे मुख्य धारा में लाया जायेगा।

बुनियादी स्तर पर शिक्षा का स्तर संतोषप्रद नहीं होने से विद्यार्थियों को मात्राओं का ज्ञान नहीं हो पाता है। इससे संबंधित शोध अध्ययन सिंह के द्वारा किया गया है। इसी प्रकार संस्कृत भाषा में भी विद्यार्थियों द्वारा मात्राओं एवं उच्चारण दोष बना रहता है। सिंह, (2004) ने विद्यार्थी मात्राओं की गलतियां क्यों करते हैं? में उन उपकरणों को बताया जो मात्राओं के लिए उत्तरदाई हैं।

संस्कृत सिखाने के लिए शिक्षण विधि तथा पाठ्यक्रम मूल्यांकन पर ध्यान आकृष्ट करना होगा इस पर कुछ शोधार्थियों ने ध्यान आकृष्ट किया है, तथा अपना शोध प्रस्तुत किया। चौहान, डॉ. कीर्ति, (2018) ने माध्यमिक स्तर पर संस्कृत विषय में सीखने वाले अधिगम संसाधन का अध्ययन किया है। यह अध्ययन कक्षा IX के विद्यार्थियों के सीखने वाले पैकेज की प्रभावशीलता पर ध्यान आकृष्ट करने के लिए किया, इससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पैकेज से संस्कृत सीखने में वृद्धि होती है। कुमावत, रमेश चंद्र, (2007) ने पश्चिम भारतीय राज्यों के माध्यमिक स्तर संस्कृत पाठ्य पुस्तको का मूल्यांकनात्मक अध्ययन किया। इन्होंने यह बताया कि भारत के विभिन्न राज्यों में संस्कृत पाठ पुस्तकों में भाषा में विविधता पाठ्य पुस्तकों के व्यवस्था क्रम में विविधता है। रावत, कुमार शरद (2014) ने ओडिशा राज्य में संस्कृत विषय में पठन योग्यता एवं अधिगम उपलब्धि पर अध्ययन किया। निष्कर्ष से यह प्राप्त किया गया है कि योग्यता एवं अधिगम उपलब्धि में ओडिशा एवं तेलुगू के विद्यार्थियों के बीच अंतर है। कुमावत, रमेश चंद्र (2004) ने प्रशिक्षण काल में तिरुपति राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के छात्र अध्यापकों द्वारा संस्कृत भाषा अध्यापन में समस्याओं का निदानात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष से यह प्राप्त किया गया है कि इस शोध में संस्कृत भाषा अध्यापन के व्यक्तिक, शैक्षिक पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां तथा मूल्यांकन से संबंधित समस्याओं का निदान किया गया है।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी अधिगम-शैली (Learning Style) होती है कोई देख कर सीखता है तो कोई अनुभव प्राप्त करके सीखता है। अधिगम-शैली का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से क्या संबंध है। अधिगम पर न केवल कक्षा के अंदर वरन बाहर के वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। शैक्षिक उपलब्धि और वातावरण का निकट संबंध होता है। बालकों की शिक्षा में अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। सफल शिक्षण अधिगम के लिए अभिप्रेरणा के स्थान सबसे महत्वपूर्ण है।

उपलब्धि-अभिप्रेरणा (Acheivement Motivation) ही छात्रों की क्रियाओं का मूल बिंदु होता है। उपलब्धि-

अभिप्रेरणा ही कहीं ना कहीं शैक्षिक उपलब्धि की वृद्धि करने में सहायक सिद्ध होती है। उपलब्धि-अभिप्रेरणा का हमारे जीवन में क्या प्रभाव पड़ता है? इस पर भी कुछ शोध अध्ययन किए गए। ज्ञान, प्रकाश, (2011) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अधिगम-शैली, आकांक्षा-स्तर एवं उपलब्धि-अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया है। इस शोध में यह प्राप्त किया गया है कि छात्रों की उपलब्धि-अभिप्रेरणा, अधिगम-शैली औसत स्तर की थी तथा छात्राओं की उपलब्धि-अभिप्रेरणा एवं अधिगम-शैली छात्रों से अधिक थी इसी प्रकार शहरी एवं ग्रामीण उनकी तुलना में शहरी का स्तर उच्च स्तर था। ग्रामीण व शहरी छात्र-छात्राओं की अधिगम-शैली का उनकी शैक्षिक-उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इनकी अभिप्रेरणा क्रेंद्रित/अक्रेंद्रित अधिगम-शैली का शैक्षिक-उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ा। ग्रामीण छात्र-छात्राओं की उपलब्धि-अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक-उपलब्धि में कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा जबकि शहरी छात्र-छात्राओं का प्रभाव सार्थक रहा। शर्मा, डॉ. मुरलीधर, (2018) ने उच्च माध्यमिक स्तर पर संस्कृत एवं हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इस शोध से यह प्राप्त किया गया है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर संस्कृत एवं हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं भाषा माध्यम से स्वतंत्र है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर संस्कृत एवं हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का भाषा माध्यम से सार्थक साहचर्य नहीं है।

आज के समय में सूचना संप्रेषण तकनीकी का चलन हो गया। इस पर भी कई शोध किए जा चुके हैं तथा भविष्य में किए जा रहे हैं। संस्कृत में सूचना संप्रेषण तकनीकी का क्या प्रभाव बताया गया है। इस पर भी शोध अध्ययन प्रस्तुत है। अग्रवाल, रिचा, (2017) ने सूचना संप्रेषण तकनीकी आधारित संस्कृत शिक्षण विधि का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, रुचि तथा सक्रियता पर प्रभाव का अध्ययन में यह प्राप्त किया गया है कि सूचना संप्रेषण तकनीकी आधारित संस्कृत शिक्षण के प्रयोग द्वारा छात्राओं की संस्कृत विषय में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक बढ़ोतरी हुई तथा संस्कृत रुचि में सार्थक अंतर पाया गया।

मनुष्य जब जन्म लेता है तो प्रथम माता ही उसकी गुरु होती है। माता-पिता का सहयोग हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। माता-पिता के सहयोग से मनुष्य निरंतर विकास की ओर बढ़ता चला जाता है। माता-पिता के सहयोग

से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी प्रभाव पड़ता है, इस पर भी शोधार्थिनी ने कुछ शोध अध्ययन किया। पी. नेहा, (2012) ने माता-पिता के सहयोग से सूरत शहर के विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन पर भावनात्मक बुधिमत्ता के प्रभाव पर अध्ययन किया। इसमें यह बताया है कि माता-पिता के सहयोग और अकादमिक के बीच एक मजबूत संबंध था। सभी छात्रों के साथ-साथ बोर्ड, मानकों में माता-पिता के सहयोग को एक महत्वपूर्ण चर के रूप में दिखाया गया है, जो बच्चों की शिक्षा को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

आजकल अधिक से अधिक स्कूल परिवारों को छात्रों की गतिविधि में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। अकादमिक प्रदर्शन के माध्यम से स्कूल जाँच-परिणाम प्रदर्शित किया कि माता-पिता का समर्थन माता-पिता और बच्चों को लाभान्वित पाया गया है। जेगधा (Jegadha), (2021) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के सम्बन्ध में शैक्षणिक चिंता एवं तनाव से निपटने की क्षमता और माता-पिता की भागेदारी पर अध्ययन किया।

इस शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों ने शहरी स्कूलों के छात्रों की तुलना में अधिक शैक्षणिक चिंता और शैक्षणिक उपलब्धि शहरी स्कूल के छात्रों से भी कम हैं।

अतः ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार लाने के लिए स्कूलों, शिक्षकों और अभिभावकों को चाहिए कि वे शैक्षणिक स्तर को कम करने के लिए हर संभव प्रयास करें। सभी शोध साहित्य के गहन अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता है कि अभी तक संस्कृत भाषा के विषय में अधिगम-शैली, उपलब्धि-अभिप्रेरणा एवं अभिभावक-आलंबन संज्ञान में नहीं आया है। अतः उपरोक्त विवेचन के परिणाम स्वरुप शोधार्थिनी के मस्तिष्क में कुछ स्वभाविक जिज्ञासाएँ एवं प्रश्न उत्पन्न हुए जो प्रस्तुत शोध समस्या के चयन का कारण बने।

2.1.0 शोध प्रश्न

प्रस्तुत शोध प्रश्न इस प्रकार हैं:

- विद्यार्थियों की अधिगम शैली का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- संस्कृत विद्यार्थी किस प्रकार की अधिगम शैली का प्रयोग करते हैं?
- विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का शैक्षिक स्तर क्या है?

- अभिभावक किस प्रकार संस्कृत भाषा को सिखाने में अपने बच्चों को सहारा देते हैं?
- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा सिखाने में किस प्रकार का अभिभावक आलंबन होता है?
- अभिभावक का संस्कृत के प्रति दृष्टिकोण कैसा है?

अतः उपरोक्त सभी प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के प्रयास हेतु शोधार्थिनी ने अधोलिखित समस्या को शोध अध्ययन के रूप में चयन किया है।

3.0.0 समस्या कथन

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम-शैली, उपलब्धि-अभिप्रेरणा एवं अभिभावक-आलंबन का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

(Effect on Academic Achivement of Upper Primary Students of Learning Style, Achivement Motivation and Parental Support in Sanskrit Language)

4.0.0 अध्ययन में प्रयुक्त पदों की व्याख्या

4.1.0 उच्च प्राथमिक स्तर

सैद्धांतिक परिभाषा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, “स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचे को 5+3+3+4 डिजाइन से मार्गदर्शित होगी जिसमें मिडिल स्कूल स्टेज कक्षा VI से कक्षा VIII के तथा 11 से 14 वर्ष के बच्चों को शामिल किया जाएगा।”

(The curricular and pedagogical structure and the curricular framework from school education will therefore be guided by 5+3+3+4 design, consisting of the middle stage VI to VIII, covering ages11-14)

कार्यात्मक परिभाषा

उच्च प्राथमिक स्तर से तात्पर्य है कि ऐसे विद्यालय जो किसी न किसी शैक्षिक संस्था द्वारा मान्यता प्राप्त तथा सरकार द्वारा संचालित है, जिनमें कक्षा VI से कक्षा VIII तक की कक्षाओं का अध्ययन-अध्यापन होता है। शोधार्थिनी ने कक्षा VIII के विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए चयनित करेगी।

4.2.0 अधिगम शैली (Learning Style)

सैद्धांतिक परिभाषा

अधिगम: वुडवर्थ के अनुसार, "नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं का अर्जन करने की प्रक्रिया अधिगम करने की प्रक्रिया है।"

शैली: वफन के अनुसार, "शैली का मनुष्य के साथ सीधा संबंध है जो उसके व्यक्तित्व से संबंधित है।"

अधिगम-शैली

कीफे के अनुसार, "अधिगम शैली, संज्ञानात्मक, प्रभावशाली और शारीरिक कारकों के सम्मिश्रण के रूप में, जो एक शिक्षार्थी की धारणा के अपेक्षाकृत स्थिर संकेतक के रूप में कार्य करता है, सीखने के माहौल के प्रति प्रतिक्रिया के साथ बातचीत करता है।"

स्टीवर्ट और फेलिसेटी के अनुसार, "सीखने की शैली उन शैक्षिक परिस्थितियों के रूप में है, जिनके तहत एक छात्र के सीखने की सबसे अधिक संभावना है।"

कार्यात्मक परिभाषा

अधिगम शैली मुख्य रूप से दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है:अधिगम और शैली। अधिगम एक जटिल प्रक्रिया है, जिसका तात्पर्य होता है व्यवहार में परिवर्तन अथवा सीखना। शैली शब्द की उत्पत्ति शील शब्द से हुई है, जिसका अर्थ स्वभाव होता है। अधिगम व्यक्ति विशेष का वह गुण है जो निर्देशित वातावरण में निश्चित चरों पर प्रतिक्रिया को दर्शाता है। अधिगम का प्रयोग व्यक्ति के व्यवहार में अनुभव, अभ्यास तथा प्रशिक्षण से आने वाले सभी प्रकार के परिवर्तन एवं परिमार्जनों को इंगित करने के लिए किया जाता है। अधिगम-शैली से तात्पर्य सीखने की परिस्थितियों में सूचनाओं को अर्जित व प्रक्रमित करने के लिए किसी व्यक्ति द्वारा स्वभावगत या आदतन अपनाए जाने वाले विशिष्ट प्रारूप से होता है।

4.3.0 उपलब्धि-अभिप्रेरणा (Achievement Motivation)

सैद्धांतिक परिभाषा

एटकिंसन और फेदर, "मनोवैज्ञानिक उपलब्धि-अभिप्रेरणा उसे कहते हैं जिसमें क्रिया क्षमता, आक्रमणशीलता तथा प्रभुता का घनिष्ठ सम्बन्ध मानव व्यवहार में लक्ष्य निर्देशन की एक पद्धति से हो।"

मन, फर्नाल्ड व फर्नाल्ड के अनुसार, "उपलब्धि-अभिप्रेरणा से तात्पर्य श्रेष्ठता के खास स्तर पर प्राप्त करने की इच्छा है। जिन व्यक्तियों में उपलब्धि-प्रेरणा अधिक होता है, वे अपनी जिंदगी में अधिक से अधिक उच्च स्तर के सफलता प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। उपलब्धि-अभिप्रेरणा सभी व्यक्तियों में समान नहीं होता है। किसी में अधिक होता है, तो किसी में यह अभिप्रेरणा कम होती है।"

कार्यात्मक परिभाषा

अभिप्रेरणा वास्तव में प्राणी की आंतरिक स्थिति अथवा तत्परता की स्थिति होती है, जो उसे किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रारंभ करने, उसे कोई निश्चित दिशा देने तथा बनाए रखने के लिए प्रवृत्त करती है। उपलब्धि-अभिप्रेरणा से तात्पर्य है कि इस प्रकार उपलब्धि-प्रेरणा से प्रेरित व्यक्ति चुने हुए क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करना चाहता है एवं अपने उपलब्धि-स्तर को उन्नत करने का प्रयत्न करता है। प्रतियोगी सर्वोच्च स्थान पाने की लालसा रखते हैं तथा अपने जीवन को गतिशील बनाते हैं।

4.4.0 अभिभावक-आलंबन (Parental Support)

सैद्धांतिक परिभाषा

जैकब और लियोनार्ड के अनुसार, "अभिभावक-आलंबन प्रभावी पालन-पोषण का एक प्रमुख आयाम है, जिसमें पोषण, लगाव, स्वीकृति, सामंजस्य और प्रेम जैसे निर्माण शामिल हैं।" नंदवाना और असवा के अनुसार, "अभिभावक-आलंबन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण योगदान में से एक है, जो माता-पिता किशोरों के लिए कर सकते हैं, माता-पिता का जितना अधिक सहयोग होगा उतना ही अधिक सामाजिक होगा। सहयोग कई तरह से दिखाया जा सकता है जैसे शारीरिक स्नेह, साहचर्य और निरंतर संपर्क।

बार्न्स के अनुसार, "अभिभावक-आलंबन को बच्चे के प्रति माता-पिता के व्यवहार, जैसे प्रशंसा करना, प्रोत्साहित करना और शारीरिक स्नेह देना, जो बच्चे को इंगित करता है कि उसे स्वीकार किया जाता है और प्यार किया जाता है, के रूप में परिभाषित किया गया है।"

कार्यात्मक परिभाषा

यह माता-पिता और बच्चों के बीच बातचीत को संदर्भित करता है। बच्चों में रुचि, समर्थन, खुलापन जैसे सकारात्मक व्यवहार शामिल हैं। संचार और माता-पिता के बच्चे का जुड़ाव जो बच्चों को स्वायत्त और अपने स्वयं के जीवन को आकार देने में, सफल होने में मदद करता है। माता पिता के द्वारा बच्चों को संस्कृत भाषा सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। माता-पिता बच्चों को स्कूल के सभी कार्यों में अपनी भागीदारी प्रदर्शित करते हैं।

4.5.0 शैक्षिक-उपलब्धि (Academic Achivement)

सैद्धांतिक परिभाषा

ऐनास्टी के अनुसार, “विद्यार्थियों के द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का वह मूल्यांकन है, जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों पर समझने के प्रयास एवं उनके स्तर एवं आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति में अभिव्यक्त होता है, जिसका परिणाम उनकी परीक्षा के लिए किए गए कार्यों से होता है।”

फ्रीमैन के अनुसार, “शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह विकल्प है, जो एक विषय या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ एवं कौशल का मापन करता है। परीक्षण एक विषय जैसे अंक गणित विषय का अलग-अलग अंक तथा बहुत से विषयों को मिश्रित संपूर्ण अंक से प्रतिबंधित होना चाहिए।”

थोर्नडाइक के अनुसार, “जब हम उपलब्धि परीक्षाओं का प्रयोग करते हैं, तब हम इस बात को निश्चित करने में रुचि रखते हैं कि एक विशेष प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के बाद व्यक्ति ने क्या सीखा है?”

कार्यात्मक परिभाषा

शिक्षार्थी द्वारा ग्रहण किए गए ज्ञान, कौशल एवं क्षमता आदि को शैक्षिक उपलब्धि कहा जा सकता है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अनेकों प्रकार का ज्ञान तथा कौशल प्राप्त करता है। इस ज्ञान तथा कौशल में कितनी दक्षता व्यक्ति ने प्राप्त की है, इसका पता उस ज्ञान तथा कौशल के उपलब्धि परीक्षण से ही चलता है। शैक्षिक उपलब्धि वार्षिक परीक्षा में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों का समग्र योग होता है। यह प्रमाणीकृत उपलब्धि परीक्षण पर व्यक्ति के प्राप्तांको को बताती है।

5.0.0 शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध की महत्ता को ध्यान में रखकर शोधार्थिनी ने निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए है:

1) उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

2) उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

3) उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावक आलंबन का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

4) उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि के लिए अंतरक्रिया का अध्ययन करना।

5) उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली तथा अभिभावक आलंबन का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि के लिए अंतरक्रिया का अध्ययन करना।

6) उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा अभिभावक आलंबन का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि के लिए अंतरक्रिया का अध्ययन करना।

7) उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं अभिभावक आलंबन का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि के लिए अंतरक्रिया का अध्ययन करना।

6.0.0 शोध परिकल्पना

Ho1 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

Ho2 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

Ho3 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावक आलंबन का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

Ho4 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा का संस्कृत भाषा में शैक्षिक

उपलब्धि के लिए अंतरक्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

Ho5 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली तथा अभिभावक आलंबन का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि के लिए अंतरक्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

Ho6 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा अभिभावक आलंबन का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि के लिए अंतरक्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

Ho7 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं अभिभावक आलंबन का संस्कृत भाषा में शैक्षिक उपलब्धि के लिए अंतरक्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

7.0.0 अध्ययन में प्रयुक्त चर

स्वतंत्र चर- अधिगम-शैली, उपलब्धि-अभिप्रेरणा एवं अभिभावक-आलंबन (Learning Style, Acheivement Motivation & Parental Support)

आश्रित चर- शैक्षिक-उपलब्धि (Academic Achievement)

8.0.0 अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन विधि में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

8.1.0 न्यादर्श (Sample)

शोध में 400 संस्कृत विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा जिसमें 200 विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश (यू. पी.) बोर्ड एवं 200 विद्यार्थी दयालबाग शैक्षणिक संस्थान, दयालबाग (डी. ई. आई.) बोर्ड से होंगे। विद्यालय का चयन सोद्देश्य विधि (Purposive Method) द्वारा किया जाएगा। विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि (Random Method) द्वारा किया जाएगा।

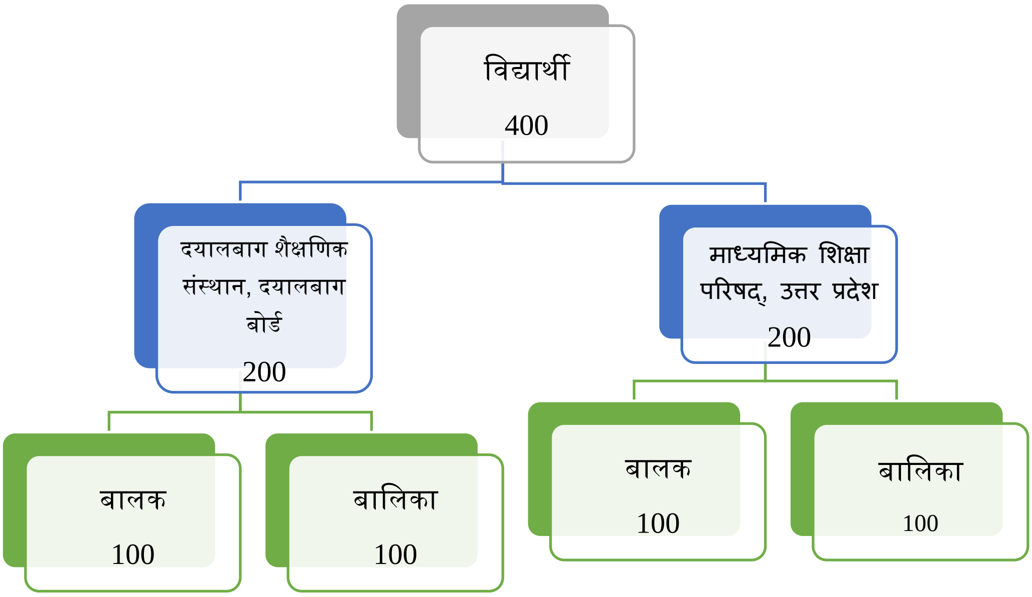

चित्र सं: 2 न्यादर्श

8.2.0 आंकड़े संग्रहण हेतु प्रयुक्त उपकरण

शोध कार्य में आंकड़ों के संग्रहण हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा।

सारिणी सं: 1.0 उपकरण

क्रमांक	उपकरण	निर्माणकर्ता	वर्ष	विवरण
1	अधिगम-शैली	स्वनिर्मित		दृश्य,श्रव्य, पठन एवं लेखन पर आधारित आयाम निर्मित किए जाएँगे।
2	उपलब्धि-अभिप्रेरणा	डॉ. टी. आर. शर्मा	2022	उच्च, औसत एवं निम्न उपलब्धि- अभिप्रेरणा पर आधारित आयाम हैं।
3	अभिभावक आलंबन (ParentalSupport)	डॉ. रीता चोपड़ा	2022	विद्यालय, गृह एवं अभिभावक-अध्यापक संघ सहभागिता पर आधारित आयाम हैं।
4	शैक्षिक उपलब्धि	अर्धवार्षिक/ वार्षिक परिणाम		विद्यार्थियों के अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक परिणाम लिए जाएँगे।

8.2.1 प्रदत्त संकलन विधि

प्रदत्त संकलन हेतु चयनित विद्यालयों दयालबाग शैक्षणिक संस्थान, दयालबाग एवं माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर

प्रदेश (डी. ई. आई. बोर्ड एवं यू. पी. बोर्ड) के प्राचार्यों की अनुमति प्राप्त करके स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा संदर्भित विद्यार्थियों पर उपकरणों (स्वनिर्मित एवं प्रमाणित उपकरण) को प्रशासित करके आंकड़ों का संकलन किया जायेगा।

8.3.0 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोध कार्य में आंकड़ों का विश्लेषण करने में सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। शोधार्थिनी निम्न सांख्यिकी का प्रयोग शोध कार्य के लिए करेगी।

- मध्यमान (MEAN)
- मानक विचलन (STANDARD DEVIATION)
- प्रसरण विश्लेषण (ANOVA)

9.0.0 परिसीमांकन

1) शोध कार्य में आंकड़ों के संग्रहण के लिए आगरा शहर में संचालित उत्तर प्रदेश (यू. पी.) बोर्ड एवं दयालबाग (डी. ई. आई.) बोर्ड के विद्यालयों को लिया जाएगा।

2) शोध कार्य में कक्षा VIII के विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

10.0.0 अध्ययन की सार्थकता

संस्कृत एक अति प्राचीन एवं उन्नत भाषा है। इसके साथ ही यह एक वैज्ञानिक भाषा भी है। वैश्वीकरण का प्रभाव सभी देशों प्रभाव सभी क्षेत्रों पर पड़ा है। भाषा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के कारण भाषाओँ के मरने का क्रम शुरू हो गया है। यूनेस्को द्वारा 2009 में प्रकाशित एक प्रतिवेदन के अनुसार भारत की 9 भाषाएँ मर चुकी हैं और 196 भाषाएँ मृतप्राय हो चुकी हैं। प्राचीन काल में संस्कृत भाषा का बहुत महत्व था और यह लोक भाषा थी। कालांतर में विदेशी आक्रान्ताओं के प्रभाव में आकर इस भाषा का महत्व कम हुआ और बीसवीं सदी के प्रारंभ तक इसका प्रचलन लगभग न के बराबर हो गया। यह कहा जाने लगा था कि यह भाषा लगभग मृतप्राय हो चुकी है। लेकिन लोगों में थोड़ी सी चेतना इस भाषा को लेकर बाकी थी। अतः, एक बार फिर संस्कृत भाषा के उत्थान के लिए कार्य शुरू कर दिए गए। इसका परिणाम सकारात्मक हुआ और आज संस्कृत भाषा के प्रयोक्ताओं की बढ़ी है। प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक भाषा के रूप में संस्कृत भाषा का प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

वर्तमान में विश्व के विभिन्न देशों में संस्कृत भाषा का अध्ययन-अध्यापन किया जा रहा है। नासा में प्रशिक्षु वैज्ञानिकों

को संस्कृत पढ़ाया जा रहा है। विश्व के समस्त कंप्यूटर वैज्ञानिकों ने इस बात को समेवत स्वर में स्वीकार किया है कि कंप्यूटर एल्गोरिथम के लिए संस्कृत सर्वश्रेष्ठ भाषा है। भारतीय संस्कृति के प्रति लोगों के मन में एक बार फिर से रुझान जग रहा है। लोगों में संस्कृत सीखने की इच्छा जागृत हो रही है। इस प्रकार संस्कृत भाषा की सामजिक प्रस्थिति में भी उन्नति हो रही है। अतः संस्कृत भाषा का भविष्य बड़ा उज्जवल प्रतीत हो रहा है और इस दिशा में थोडा और प्रयास किये जाएँ तो संस्कृत भाषा उन्नति की ओर अग्रसर होगी।

कोई भी अनुसंधान सही अर्थों में तभी अनुसंधान होता है, जब सभी जन सामान्य के लिए महत्व रखता है। शोध अध्ययन की सार्थकता शोध कार्य को भविष्य में होने वाले लाभ को दर्शाता है कि इस शोध अध्ययन से क्या-क्या जानकारियां प्राप्त हो सकती है? यह शोध महत्वपूर्ण पाया गया तो यह प्रशासक,विद्यार्थी, शिक्षक व माता-पिता के लिए सहायक सिद्ध होगा।

प्रशासक विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में सुधारात्मक कदम उठाने के लिए सुझाव दे सकता है तथा नवीन शिक्षण विधियों का निर्माण कर सकता है। आजकल सूचना संप्रेषण तकनीकी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। इसकी सहायता से बच्चों को संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि बढ़ा सकता है। प्रशासक माता-पिता से बातचीत करके उन्हें भी समझा सकता है कि बच्चों पर अधिक से अधिक ध्यान दें ताकि बच्चे संस्कृत सीख सकें।

विद्यार्थी इस शोध अध्ययन से यह जान सकते हैं कि वे संस्कृत भाषा की कितनी जानकारी प्राप्त कर चुके हैं तथा अपने शैक्षिक उपलब्धि का स्तर जान सकते हैं। उपलब्धि अभिप्रेरणा के स्तर की स्वयं जांच कर सकते हैं। संस्कृत भाषा में अभिरुचि उत्पन्न करने के लिए भिन्न प्रकार की अधिगम शैली का प्रयोग करेंगे।

शिक्षक इस शोध अध्ययन से यह जान सकते हैं कि कितने अच्छे से विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा समझ में आया या नहीं वे अपने शिक्षण विधि में परिवर्तन कर सकते हैं। बच्चों को अधिक से अधिक सीखने के लिए अभिप्रेरित कर सकते हैं। शिक्षक माता-पिता के साथ बातचीत करके माता-पिता को संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए उन्हें भी अभिप्रेरित करेंगे।

माता-पिता का सहयोग कितना प्रभावशाली है बच्चों को संस्कृत सिखाने के लिए यह जान सकेंगे एवं अधिक से अधिक भागीदारी कर सकते हैं। वे अपने बच्चों को प्रोत्साहित करेंगे। माता-पिता स्वयं ही बच्चों को संस्कृत सीखने के लिए घर

में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- गुप्ता, प्रो. एस. पी. (2017). *अनुसंधान संदर्शिका संप्रत्यय कार्य विधि एवं प्रविधि*, प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन.
- राय, पारसनाथ (2016). *अनुसंधान परिचय*, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल.
- चौबे, नारायण विजय (2013). *संस्कृत शिक्षण विधि हिंदी ग्रंथ अकादमी*, प्रभाग उत्तर प्रदेश हिंदी संस्था, लखनऊ.
- गुप्ता, प्रो. एस. पी एवं गुप्ता, डॉ अलका (2018). *व्यवहार पर विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियां*, शारदा पुस्तक भवन.
- सिंह, कुमार अरुण (2015). *मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां.*
- कॉल, लोकेश (2012). *शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली*, दिल्ली: विकास पब्लिकेशन.
- जोशी, डॉ. सुषमा (2011). *संस्कृत शिक्षण.*
- शर्मा, मधु (2017). *उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार प्रतिमान पर मल्टीमीडिया सोशल नेटवर्क प्रदर्शन का प्रभाव.*
- *संस्कृत का शिक्षा शास्त्र*, शिक्षक शिक्षा विभाग, शिक्षा शास्त्र विद्या शाखा उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय.
- कुमावत, रमेश चंद्र (2004). *प्रशिक्षण काल में तिरुपति राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के छात्र अध्यापकों द्वारा संस्कृत भाषा अध्यापन में समस्याओं का निदानात्मक अध्ययन.*
- अग्रवाल, रिचा (2017). *सूचना संप्रेषण तकनीकी आधारित संस्कृत शिक्षण विधि का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि रुचि तथा सक्रियता पर प्रभाव का अध्ययन.*
- चौहान, डॉ कीर्ति (2018). *इफेक्टिवेनेस ऑफ लर्निंग पैकेज इन संस्कृत सब्जेक्ट फॉर द सेकेंडरी स्कूल.*
- रावत, कुमार शरद (2014). *रीडिंग एबिलिटी एंड लर्निंग अचीवमेंट इन संस्कृत ऑफ उड़ीसा.*
- Jegadha, (2021). *एकेडमिक एंजायटी स्ट्रेस कॉपिंग एबिलिटी एंड पैरेंटल सपोर्ट इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ हायर सेकेंडरी स्टूडेंट्स.*

- कुमावत, रमेश चंद्र (2007). *पश्चिम भारतीय राज्यों के माध्यमिक स्तर संस्कृत पाठ्य पुस्तको का मूल्यांकनात्मक अध्ययन.*
- शर्मा, डॉ. मुरलीधर (2018). *उच्च माध्यमिक स्तर पर संस्कृत एवं हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन. Vol.7 ISSN No 2277-8160 Gjra Global Journal for Research Analysis pp 75-76*
- ज्ञान, प्रकाश (2011). *माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अधिगम शैली आकांक्षा स्तर एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन.*
- पी, नेहा (2012). *इनफ्लुएंस आफ इमोशनल इंटेलिजेंस ऑन द एकेडमी परफॉर्मेंस ऑफ द स्टूडेंट्स ऑफ स्टैंडर्ड VIII एंड IX ऑफ सूरत सिटी विद दियर पैरेंटल सपोर्ट.*
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). *मानव संसाधन विकास मंत्रालय*, भारत सरकार.
- शर्मा, आर. ए. (2006). *शैक्षिक अनुसंधान*, मेरठ: लाल बुक डिपो.
- पांडे, रामशक्ल (2010). *भारतीय शिक्षा की समस्याएं.*
- गुप्ता, प्रो. एस. पी (2016). *भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं.*
- चौहान, एकबाल मिस बुशरा एंड खान, मसरूर रेहाना (2010). *इंपैक्ट ऑफ़ पैरेंटल सपोर्ट ऑन एकेडमिक परफारमेंस एंड सेल्फ कॉन्सेप्ट ऑफ द स्टूडेंट. vol.4,pp 14-26*
- Durisic, Masa and Bujevac, Mila (2017). *पैरेंटल इंवॉल्वमेंट इंपॉर्टेंट फैक्टर फॉर सक्सेसफुल एजुकेशन. C.E.P.S journal vol.7 pp137-153*
- लॉरेंस, डॉ. एस. अरुल एंड बराठी (2016). *पैरेंटल इनकरेजमेंट इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेंटऑफ हायर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. vol.2 IJARIIE-ISSN(O).2395.4390 pp1234-1239*
- संस्कृत शिक्षक संदर्शिका (2012). *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद*, नई दिल्ली.
- पांडे, रामशक्ल (2008). *संस्कृत शिक्षा*, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.
- मंगल, एस. के. (2002). *शिक्षा मनोविज्ञान*
- चौहान, डॉ. रेणु (2017). *संस्कृत शिक्षण,* मेरठ: आर लाल बुक डिपो.

- जैन, प्रकाश शुध्यात्म (2014). *संस्कृत शिक्षण*, आगरा: राखी प्रकाशन.
- महर्षि, कुमार संतोष (2012). *संस्कृत शिक्षण*, दिल्ली.
- *भाषा शिक्षण* (2018). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली.
- विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली.
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली.
- पाण्डेय रामशक्ल (2008). *संस्कृत शिक्षण*, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.
- शर्मा, उमाशंकर (2008). *संस्कृत साहित्य का इतिहास*, बनारस, चौखम्बा बुक्स.
- झा, डॉ. सुमन (2014). संस्कृत-शिक्षा में अनुसन्धान का वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियों एवं सुझाव.
- https://www.scotbuzz.org
- https://www.uok.ac.in
- https://www.egyankosh.ac.in
- https://www.encyclopedia.com
- http://www.ue,edu.pk/jrre
- www.ijariie.com
- https://yadavgbnrpwordpress,com